Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPlL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 11

बाजार-दर्शन - जैनेंद्र कुमार

लेखक परिचय

जैनेंद्र कुमार का जन्म सन 1905 , में अलीगढ़ के कौड़ियागंज गांव में हुआ। इन्हे हिन्दी के मनोवैज्ञानिक कथा साहित्य का जन्मदाता कहा जाता है। उन्होंने हिन्दी उपन्यास और कहानियों को नयी दिशा दी। वे गंभीर चिंतक भी रहे हैं।परख , अनाम स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्धन और मुक्तिबोध इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। उनके कहानी संग्रह हैं- वातायन, एक रात, दो चिड़िया, फाँसी, नीलम देश की राजकन्या तथा पाजेब।उनके विचार-प्रधान निबन्ध प्रस्तुत प्रश्न , जड़ की बात , पूर्वादय, साहित्य का श्रेय और प्रेय , सोच विचार तथा समय और हम उनकी बहुमुखी प्रतिभा के परिचायक हैं। जीवन के प्रश्नों को सुलझाने में जैनेन्द्र की दृष्टि व्यापक रही है। मुंशी प्रेमचन्द ने उन्हें भारत का गोर्की कहकर महिमामण्डित किया था। सन् 1988 में आपका देहावसान हो गया।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक ने बाजार की असली कृतार्थता बताई है –

(अ) अभाव जाग्रत करना

(ब) आवश्यकता के समय काम आना।

(स) अधिकाधिक धन कमाना

(द) अनाप-शनाप सामान खरीदना।

उत्तर: (ब)

प्रश्न 2. भगत जी ने कभी चूरन बेचकर छः आने से ज्यादा नहीं कमाए क्योंकि

(अ) उनका चूरन और अधिक नहीं बिकता था।

(ब) वे आधुनिक मार्केटिंग नहीं जानते थे।

(स) इससे अधिक परिश्रम वे नहीं कर सकते थे।

(द) वे सन्तोषी थे इसलिए अधिक कमाना ही नहीं चाहते थे।

उत्तर: (द)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1. लेखक के अनुसार बाजार का जादू किस राह काम करता है?

उत्तर - लेखक के अनुसार बाजार का जादू आँख राह काम का है।

प्रश्न 2. लेखक ने किस समय बाजार न जाने की सलाह दी है?

उत्तर - लेखक में सलाह दी है कि जब मन खालो हो , तब बाजार मत जाओ।

प्रश्न 3. चूरण वाले भगत जी का जीवन हमें क्या शिक्षा देता है?

उत्तर-चूरण वाले भगत जी के जीवन से यह शिक्षा मिलती कि बाजार की चकाचौंध से व्यर्थ में आकर्षित मत होओ।

प्रश्न 4 , पैसे की परचेजिंग पावर ' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - पैसे देकर चीजें बाजार से खरीदी जाती है। जितना ज्यादा पैसा उतना ही ज्यादा चौजें यही पैसे की परचेजिंग पावर है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1. जो लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं , उनसे बाजार पर क्या प्रतिकूल असर पड़ता है?

उत्तर- क्रय-शक्ति से सम्पन्न लोग या पैसे की प्रचुरता से मनचाही वस्तुएं खरीदने की क्षमता रखने वाले लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। ऐसे लोग प्रायः अपनी क्रय-शक्ति से ज्यादा अनावश्यक वस्तुओं को भी खरोददारी करते है। इसलिए बाजारवाद , छल-कपट, लूट-खसोट: मनमाना मूल्य लेना इत्यादि शैतानी प्रवृत्तियों को बल मिलता है। इस - तरह असीमित पर्चेजिंग पावर से बाजार पर बुरा प्रभाव पड़ता है और बाजारूपन बढ़ता है।

प्रश्न 2. हमें बाजार से वस्तुएँ खरीदते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर - 'बाजार-दर्शन' पाठ के अनुसार बाजार से वस्तुएँ खरीदते समय मन भरा होना चाहिए। उस समय मन परन नियंत्रण चाहिए , क्रय-शक्ति होने पर भी लालच नहीं रखना चाहिए और बाजार की चकाचौंध से भी बचना चाहिए। सिर्फ उपयोगी एवं आवश्यक चीज़ को हो खरीदने का दृढ़ निश्चय करना चाहिए। लालच से या व्यर्थ की लालासा से सर्वथा मुक्त रहना चाहिए। विवेक और पर्चेजिंग पावर का सदुपयोग करना चाहिए।

निबन्यात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1. 'बाजार-दर्शन' निबन्ध में लेखक ने बाजार का सही उपयोग करने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखने पर बल दिया है? आप बाजार का सही उपयोग किस प्रकार करेंगे?

उत्तर - लेखक ने 'बाजार-दर्शन' निबन्ध में बाजार का सही उपयोग करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखने के लिए कहा है-

(1) बाजार जाते समय मन में व्यर्थ का लालच-लोभ नहीं रखना चाहिए और विवेक से मुझे तो अनुसार वस्तुओं का क्रय करना चाहिए

(2) बाजार में खुली आँख से जाना चाहिए। बाजार में सजावट की चकाचौंध रहती है , उसके आकर्षण से अनुपयोगी वस्तुओं को खरीदने का लालच आ जाता है, लेकिन खुली आँख तथा तुष्ट मन से चकाचौंध को देखकर भी भ्रमित नहीं होना चाहिए।

(3) पर्चेजिंग-पावर तथा पैसे की व्यंग्य-शक्ति दिखाने का प्रयास कभी नहीं करना चाहिए।

मन को वश में रखकर आवश्यकता का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

उपर्युक्त बातें अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा विक्रेता तथा क्रेता दोनों का मार्गदर्शन करने वाली हैं।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

मैं भी बाजार से जरूरत की चीजें खरीदने के लिए जाऊँगा किन्तु वहाँ से अनावश्यक चीजें नहीं खरीदूंगा और अपने धन का दंभपूर्ण प्रदर्शन भी नहीं करूंगा।

प्रश्न 2. उपभोक्तावाद से प्रभावित समाज में उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने के लिए क्या-क्या सुझाव देना चाहेंगे?

उत्तर - वर्तमान काल में भौतिकवादी प्रवृत्तियों का जोर होने से उपभोक्तावाद का प्रसार हो रहा है अब 'जब तक जीवित रहो, सुख से रहो, ऋण लेकर घी पीओ' वाला चार्वाक सिद्धान्त सब ओर दिखाई दे रहा है। इस कारण लोग अपनी जेब नहीं देखते हैं और बाजार से किस्तों में सारा सामान उठा लाते हैं। फिर बैंक की या ऋण देने वाली एजेंसी की किश्तें चुकाने में सारा जीवन खपा देते हैं। बाजार में विज्ञापनबाजी की चकाचौंध रहती है, इसमें छल-कपट और को दिखावा भी काफी रहता है। फलस्वरूप उपभोक्ता वर्ग का खूब शोषण किया जाता है। किश्तों में लिये गये सामान का ब्याज भी दुगुना-चौमुना वसूला जाता है। उपभोक्ताओं को शोषण से बचाने के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं -

(1) उपभोक्ता बाहरी चकाचौंध में न पड़कर केवल जरूरतभर की चीजें ही खरीदें

(2) बाजारवाद के कपटी एवं अनीतिपूर्ण अर्थशास्त्र से बचें।

(3) बाजारवाद से बचें और पर्चेजिंग पावर का दुरुपयोग भी न करें।

(4) गैर जरूरी के फालतू चीजों और विलासिता की वस्तुओं को खरीदने में फिजूलखर्ची से भी बचें।

(5) विज्ञापनबाजी के चक्कर में न पड़कर जाँच-परख कर क्रय करें।

(6) जहाँ तक हो सके, किश्तों के चक्कर में नहीं पड़े।

भाषा-ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न

प्रश्न 1. 'तिरस्कार' शब्द 'तिरः+कार यह विसर्ग सन्धि है। विसर्ग सन्धि के निम्न सन्धि-विच्छेद कीजिए - भास्कर, पुरस्कार, निस्सार, निर्बल, निर्जन, बृहस्पति ।

उत्तर-भास्कर = भा: + कर।

पुरस्कार = पुरः + कार।

निस्सार - निः + सार।

निर्बल = निः + बल।

निर्जन = निः + जन।

बृहस्पति = बृहः + पति।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg